आचार–निष्ठा के प्रतीक–पुरुष : आचार्य महाश्रमण

– मुनि सुखलाल

मारवाड़ के किसी एक छोटे से गांव की वर्षों पूर्व की घटना है। गुरुदेव तुलसी के साथ विहार करते हुए हम उस गांव में पहुंचे थे। सायं–काल का समय था। मैंने हवा तथा प्रकाश के लिए उस कमरे का एक छोटा सा दरवाजा खोल दिया। तत्काल एक बाल मुनि का स्वर सुनाई दिया – महाराज! हमारे लिए चूलिये का कपाट खोलना उचित है? मुझे सत्य को स्वीकार करना चाहिए था, अतः स्वीकार किया। मेरे से भूल हुई 'मिच्छामि दुक्कड़म्।'

कपाट कोई बड़ा नहीं था। रजोहरण से थोड़ा सा बड़ा था। पर मर्यादा तो मर्यादा होती है। हमारी परम्परा के अनुसार उतने बड़े चूलिए के कपाट को खोलना उचित नहीं था। मैंने प्रमादवश कब्जे वाले कपाट की तरह उसे खोल दिया। पर मुझे उस बाल मुनि की अप्रमत्तता तथा साहस पर गौरव हुआ।

इस घटना पर उस समय भी मेरा चिंतन कई देर तक चलता रहा पर आज जब उस बाल मुनि को आचार्य महाश्रमण के रूप में पदारूढ़ देखता हूं तो अनुभव होता है, गुरुदेव श्री तुलसी ने तेरापंथ के भविष्य के प्रति ठीक ही कहा था – ''शुभ भविष्य है सामने''। गलती के छोटी बड़ी होने का सवाल नहीं है, सवाल अप्रमत्तता का है। जब भी आदमी को प्रमाद घेरता है। तो वह जानबूझ कर भी और अनजाने में भी कोई गलती कर लेता है। विशिष्ट व्यक्ति वही होता है जो प्रमाद के कोहरे में भी अप्रमाद के साधनासूर्य का दर्शन कर सकता है। आचार्य महाश्रमण में मुझे उसी अप्रमत्तता के दर्शन होते हैं।

तेरापंथ धर्मसंघ की अपनी अनेक विशेषताएं हैं। पर सबसे बड़ी विशेषता है आचार की प्रतिष्ठा। आचार्य भिक्षु ने आचार की प्रतिष्ठा की वेदी पर ही तेरापंथ के प्रदीप का प्रस्थापन किया था। जिस धर्मसंघ में आचार के प्रति जागरूकता होती है वही अपना दीर्घकालीन यात्रा–पथ बना सकता है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि परम्परा को चिरस्थायिनी बनाने के लिए ज्ञान की भी महती भूमिका है। बिना ज्ञान की ज्योति के प्रकाश दीप की चिमनी को परम्परा का धुंआ मलिन बना सकता है। पर यदि ज्ञान आचार से परिपूर्ण नहीं है तो परम्परा को अनजानी राहों में भटकने से रोकना भी बहुत कठिन है। तेरापंथ के आचार्यों ने सदा ही ज्ञान की ज्योति जगाई है। आचार्य भिक्षु ने इस पंथ के हर मोड़ पर ज्ञान के ऐसे मणिदीप प्रस्थापित किए हैं जो भयंकर आंधी और पानी से भी प्रभावित नहीं होते। अंध तमिस्रा में भी वे हमारा मार्गदर्शन कर सकते हैं। जयाचार्य ने उन मणिदीपों को और ऊंचा आधार प्रदान किया। आचार्यश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ न केवल उससे स्वयं प्रभासिक्त हुए अपितु दूसरों को भी प्रभासिक्त किया और बड़ी प्रसन्नता की बात है कि आचार्य महाश्रमण न केवल निर्मल प्रज्ञा से परिपूर्ण हैं अपितु पूर्वाचार्यों की तरह आचार–सम्पदासे भी सम्पन्न हैं।

दुनिया में कसौटी करने वालों की कमी नहीं होती। आचार्य महाश्रमण की कसौटियां भी कम नहीं हुई। सर्वप्रथम तो सोजतरोड में गुरुदेव श्री तुलसी ने आचार्य भिक्षु द्वारा आचार्य भारीमालजी की तरह आपकी कसौटी करते हुए कहा – महाश्रमण मुनि मुदितकुमार अगला वर्ष तुम्हारी कसौटी का वर्ष है। इस वर्ष में यदि तुम्हारे सुविधावादी होने की कोई शिकायत सामने आई तो तुम्हें प्रायश्चित करना होगा। आज का आचार्य महाश्रमण और उस समय का महाश्रमण मुनि मुदित कुमार उस कसौटी पर खरा उतरा। आचार्य तुलसी की कसौटी पर खरा उतरना सरल बात नहीं थी। पर महाश्रमण ने अपने इस अनुपम अलंकरण को अपनी अभिधा ही बना ली। भले ही आपको अनेक मृदु–कठिन अनुशासनों से गुजरना पड़ा होगा, पर आपने हर मौके पर अपनी योग्यता का परिचय दिया।

दृश्य एक होता है पर द्रष्टाओं का अंतर उसकी अनेक व्याख्याएं कर देता है। एक व्यक्ति के बारे में भी अनेक धारणाएं हो सकती हैं। पर महाश्रमण मुनि मुदित कुमार ने अपने आपको ऐसे रूप में ढाला

कि जब इन्हें युवाचार्य घोषित किया गया तो उस समय पर भी पूरे संघ ने इन्हें सर आंखों पर उठा लिया। निश्चय ही आपके युवाचार्य घोषित होने की एक लम्बी प्रक्रिया है। आपको युवाचार्य तो आचार्य महाप्रज्ञजी ने घोषित किया। पर आपके बारे में गुरुदेव श्री तुलसी ने जो संकेत दे दिए थे, वे भी अज्ञात नहीं है।

केवल आचार्यश्री तुलसी ही नहीं, आपके बारे में अनेक लोगों ने अपने अहसासों को समय–समय पर अभिव्यक्त किया है। अनेक ज्योतिर्विद भी इस आशय की भविष्यवाणियां करते रहे हैं। उस समय तो वे भविष्यवाणियां थीं, पर आज वे सत्य हो गई हैं। मेरे संसार पक्षीय भाई आसकरण सेठिया की भविष्यवाणी से भी मैं अभी–अभी अपने भाई श्रीचंद सेठिया से अभिज्ञ हुआ। यह बात उस समय की है जब बाल मुनि मुदितकुमार एक अतिप्रतिष्ठित संत के साथ सुजानगढ़ से दिल्ली की ओर प्रस्थान कर रहे थे। मेरे भाई आसकरण उस समय अपने मामा श्री मांगीलालजी बैद के साथ संतों को विदा करने, पहुंचाने गांव बाहर खादी आश्रम में गए तो मांगीलाल ने पूछा – भाणू! तुझे कुछ भविष्य का आभास होता है तो इन अतिप्रतिष्ठित संत के बारे में कुछ बता। आसकरण ने उनका ठीक से निरीक्षण किया तथा लौटते समय कहा – मामाजी! इन अतिप्रतिष्ठित संत के बारे में तो मैं कुछ नहीं कहता, पर उनके साथ जो ध्यानलीन बाल मुनि बैठे थे, वे अवश्य आगे जाकर तेरापंथ के यशस्वी संत होंगे। आज आसकरण तो विद्यमान नहीं है पर उसकी भविष्यवाणी अवश्य सिद्ध हो रही है। वह बाल मुनि मुदितकुमार ही आज तेरापंथ के आचार्यश्री महाश्रमण बन गए हैं।

आज के स्वतंत्रता के युग में पद को लेकर विवाद होना कोई बड़ी बात नहीं है। राजनीति में तो आये दिन जोड़–तोड़ का क्रम चलता ही रहता है। और आज तो धर्म सम्प्रदाय भी पद को लेकर विघटित होते दिखाई दे रहे हैं। पर यह अजीब बात है कि श्रीमहाश्रमण के आचार्य पद के मनोनयन में तेरापंथ में उनके विरोध में कोई एक क्षीण स्वर भी नहीं उभरा, कोई एक पत्ता भी नहीं हिला। इनके नाम की घोषणा हुई तो सारे संघ ने इस संतश्रेष्ठ को सहज भाव से आचार्य के रूप में स्वीकार कर लिया। मेरे विचार से इस घटना में कोई राज है तो यही है कि आचार्य महाश्रमण एक आचारनिष्ठ संत प्रवर हैं। आपका दृष्टिसंयम, वाणीसंयम, पद–प्रतिष्ठा का संयम इतना गजब का है कि हर कोई आपके समकक्ष होने का साहस ही नहीं कर सकता। मैंने अत्यन्त नजदीक से देखा है, आप घंटों–घंटों अपने में लीन बैठे रहते हैं। बहुत बार सबकुछ देखते हुए भी आप जैसे अद्रष्टा बन जाते हैं। नम्रता की तो जैसे आप प्रतिमूर्ति हैं। छोटे से छोटे संत की सेवा के लिए सदा तत्पर रहते हैं। मन के इतने मृदु कि किसी को कठोर शब्द कहने का तो शायद काम ही नहीं पड़ता। छद्मस्थता की संभावनाओं के प्रति सजग आपकी वाणी में भाषा–समिति का विवेक विशेष रूप से दृष्टिगत होता है। बिना मतलब बोलने को तो कोई सवाल ही नहीं पर बोलते हैं तो जैसे शब्द पर विवेक का पहरा लगा हुआ रहता है।
ऐसे आचार्य को प्राप्त कर तेरापंथ को अपनी भाग्यशालिता पर गौरव होता है। तेरापंथ का संविधान और परम्परा भी आपकी अप्रतिस्पर्धिता का एक कारण हो सकती है, पर आपकी अजातशत्रुता तो स्पष्ट दिखाई दे रही है। यह तो और भी खुशी की बात है कि आप वास्तव में एक युवा आचार्य हैं तथा आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जैसे प्रज्ञाप्रवर आचार्यों का वरदहस्त आपके सिर पर रहा है। आचार्य के रूप में आपका व्यक्तित्व और अधिक ऊंचाइयों का स्पर्श करेगा, यह तो संदेह रहित है। मुझे लगता है आचार्यश्री तुलसी ने जिस तरह आचार्य महाप्रज्ञ में अपने आपको संक्रमित कर दिया उसी तरह आचार्य महाप्रज्ञ ने भी अपने उत्तराधिकारी को सब तरह से परिपूर्ण बना दिया। एक लम्बा भविष्य हमारे समक्ष चर्चा के लिए है। आज तो हम भिक्षु शासन के आकाश में इस नवोदित नक्षत्र का अभिवादन करते हैं। आपके प्रति अनन्त–अनन्त मंगल कामनाएं करते हैं।

सत्य और सौन्दर्य के प्रतिमान

– साध्वी सुमतिप्रभा

एक राजा अपना सुन्दर चित्र बनवाना चाहता था। उसने नगर में यह घोषणा करवा दी कि जो चित्रकार मेरा सुन्दर चित्र बनाएगा उसे पांच हजार रुपयों का पुरस्कार दिया जाएगा। तीन चित्रकार राजा के समक्ष उपस्थित हुए। चित्र का प्रारम्भ करते ही तीनों चित्रकारों के मन में राजा के कानेपन का प्रश्न उत्पन्न हुआ। तीनों ने भिन्न–भिन्न दृष्टि से उसका समाधान किया। एक चित्रकार ने सोचा यदि मैं कानापन दिखाऊंगा तो सुन्दरता खत्म हो जाएगी। यह सोचकर उसने अपने चित्र में राजा की दोनों आंखें खुली दिखा दी। उसने सुन्दरता की रक्षा के लिए सचाई को खत्म कर दिया। दूसरे चित्रकार ने अपने चित्र में सत्य की सुरक्षा की किन्तु सुन्दरता की परवाह नहीं की। तीसरे चित्रकार ने सच्चाई और सुन्दरता दोनों का समन्वय किया। उसने धनुष बाण चढ़ाकर निशाना साधते हुए राजा का चित्र बनाया। उसमें एक आंख अपने आप बन्द हो गई। जब राजा के सामने तीनों चित्र प्रस्तुत किए गए तो उसने तीसरे चित्र को राजमान्य घोषित किया। उस चित्रकार को निश्चित धनराशि से पुरस्कृत और सम्मानित किया। जीवन में सत्य और सुन्दर दोनों का समन्वय होना चाहिए। कहा भी गया है – सत्य के बिना सुन्दर निराधार होता है –

सुन्दर के बिना सत्य तलवार की धार होता है।
सत्य और सुन्दर का समन्वय होता है जिसके जीवन में,
वह महापुरुष धरती का श्रृंगार होता है।।

सत्य और सुन्दरता के समन्वय रूप आचार्य महाश्रमण सम्पूर्ण मानवजाति के लिए आदर्श हैं। वे सत्य को जीना जानते हैं। महापुरुष द्वारा भोगा गया सत्य किसी एक का सत्य न रहकर सार्वभौम सत्य बन जाता हे। प्रकाश को प्राप्त करने का इच्छुक व्यक्ति कभी अपनी हथेली पर सूरज का बिम्ब लेकर नहीं चलता। अमृत को पाने की इच्छा रखने वाला व्यक्ति कभी देवलोक में निवास नहीं करता और ऊर्जा के अक्षय स्रोतों को उद्घाटित करने वाला व्यक्ति विरासत में प्राप्त साधनों का ही उपयोग नहीं करता। वह नई–नई टेक्नोलॉजी को काम में लेता है।

इसी प्रकार सत्य की यात्रा करने वाला साधक पुरानी लकीरों पर चलकर ही आत्मतोष नहीं पाता। सत्य की यात्रा वह करता है, जो नई लकीरें खींचने का साहस रखता है। नई लकीरें वही व्यक्ति खींच सकता है जिसमें सत्य और सौन्दर्य होता है। जिसमें सत्य होता है, सौन्दर्य होता है, वह सबके आकर्षण का केन्द्र बन जाता है।

आचार्य महाश्रमण में सत्य है, सौन्दर्य है इसलिए वे सबके चहेते बने हुए हैं। तभी तो आचार्य महाप्रज्ञ को भी कहना पड़ा कि युवाचार्य महाश्रमण में वीतराग–स्तोत्र का वह श्लोक प्रायः घटित हो रहा है जिसमें भगवान की अद्भुतता को दर्शाया गया है, वह श्लोक है – शमोद्भुतोभुतं रूपं, सर्वात्मसु कृपाद्भुता।

सर्वाद्भुतनिधीशाय, तुभ्यं भगवते नमः।।

भगवन! आप सब प्रकार की अद्भुत निधियों के स्वामी हैं। आपका उपशम अद्भुत है, रूप अद्भुत है, सब प्राणियों के प्रति कृपा अद्भुत है, इसलिए आपको नमस्कार है। आचार्यप्रवर ने कहा – आकर्षण उसी व्यक्ति के प्रति होता है, जो अद्भुत होता हैं अभी कई दिनों से एक बात बार–बार मन में आ रही थी। सोचा, कहूं या नहीं? कहीं महाश्रमण को नजर न लग जाए। दो–तीन वर्ष पहले महाश्रमण का प्रवचन सुना, उससे अब ये काफी ऊपर उठ गए हैं। मन में बहुत प्रसन्नता हुई। अब कभी मैं प्रवचन में न जाऊं तो कोई कठिनाई नहीं है। अब ये कर सकते हैं। इनकी वाणी में जोश है। ये विषय का प्रतिपादन भी अच्छा करते हैं। महाश्रमण! तुम्हें भी अद्भुत करना है। तुम्हारा उपशम अच्छा है, तुम्हारा रूप भी सुन्दर है, तुम्हारी करुणा काफी अच्छी है। तुम कई बातों में तो हमारे से भी आगे बढ़ रहे हो।

महाश्रमण! तुम लक्ष्य बनाओ कि मुझे अद्भुत की ओर जाना है। आचार्य तुलसी के शब्दों में – ''जिसके मन में सत्य के प्रति निष्ठा होती है, उसका जीवन तेजस्वी बनता है, सुखी बनता है। सत्यनिष्ठ

व्यक्ति कभी शरीर से ऐसा संकेत या कायिक प्रयोग नहीं करता, जिसमें दिखाई कुछ और दे, भावार्थ कुछ और हो। वह भाषा का भी ऐसा कपटपूर्ण प्रयोग नहीं करता, जिसमें सुनाई कुछ और दे तथा कहा कुछ और जाए। वह भावों का भी ऐसा प्रयोग नहीं करता, जिसमें यह अनुभव हो कि व्यक्ति ध्यान–जाप कर रहा है जबकि करता है किसी का अनिष्ट चिन्तन।'' आचार्यप्रवर में सत्य निष्ठा कूट–कूट कर भरी हैं युवाचार्य मनोनयन के बाद संघ के नाम प्रथम उद्‌बोधन' में आचार्यश्री ने अपने प्रति चार मंगल कामनाएं की। उन्होंने कहा – ''मैं अपने प्रति प्रथम मंगल कामना यह करना चाहता हूं कि मेरे मन में सत्य के प्रति सदा भक्ति भाव बना रहे, समर्पण का भाव बना रहे और अन्तिम श्वास तक ही नहीं, केवलज्ञान की प्राप्ति तक बना रहे। वह भाव पराकाष्ठा तक पहुंचता रहे।''

आचार्य पदारोहण दिवस के अवसर पर मैं उस अलौकिक व्यक्तित्व का अभिनन्दन करती हूं जिसका उज्जवल आभामण्डल किसी भी नवागन्तुक को प्रथम दर्शन में ही अभिभूत कर लेता है। जिसके चेहरे की अद्‌भुत दीप्ती, आंखों का तेज और होठों की मुस्कान संत्रस्त मानवता को तृप्ति प्रदान कर रही है। आप जैसे वीतराग पुरुष को प्राप्तकर हम धन्य हैं, कृतकृत्य हैं।

आप दीर्घायु हों, स्वस्थायु हों। आपका हर वर्ष नया इतिहास और विश्वास लेकर आए। आपके कर्तृत्व से धर्मसंघ के हर सदस्य का योगक्षेम हो। आप करुणा के निर्झर बनकर निष्प्राणों में प्राण भरते रहें। आप इतिहास के ऐसे उजले पृष्ठ बनें जिन्हे हर युग में पीढियां पढ़ सके, समझ सके और जी सके। आचार्यवर के आशीर्वाद, स्वयं की साधना और लोगों की सद्‌भावना से आप शक्तिस्रोतों को उद्‌घाटित करते हुए मानव जाति का पथ प्रशस्त करते रहें।